Pro

Chapter 12

Hindi Interlinear

Reference: Hindi Easy-to-Read Version

1

אֹהֵב	מוּסָר	דֵּעַת	וְשֹׂנֵא	תוֹכַחַת	בָּעַר׃	
प्रेम-करनेवाला	शिक्षा-को	ज्ञान-को	और-घृणा-करनेवाला	डाँट-को	पशु-है	
H0157	H4148	H1847	H8130		H1198	

जो शिक्षा और अनुशासन से प्रेम करता है, वह तो ज्ञान से प्रेम यूँ ही करता है। किन्तु जो सुधार से घृणा करता है, वह तो निरा मूर्ख है।

2

טוֹב	יָפִיק	רָצוֹן	מֵיְהוָה	וְאִישׁ	מְזִמּוֹת	יַרְשִׁיעַ׃
भला	प्राप्त-करता-है	प्रसन्नता	यहोवा-से	और-पुरुष	दुष्ट-योजनाओं-वाला	दोषी-ठहराएगा
	H6329	H7522	H3068	H0376	H4209	H7561

सज्जन मनुष्य यहोवा की कृपा पाता है, किन्तु छल छंदी को यहोवा दण्ड देता है।

3

לֹא־	יְכוֹן	אָדָם	בְּרֶשַׁע	וְשֹׁרֶשׁ	צַדִּיקִים	בַּל־	יִמּוֹט׃
नहीं	स्थिर-होगा	आदमी	दुष्टता-में	और-जड़	धर्मियों-की	नहीं	हिलेगी
H3808		H0120	H7562	H8328	H6662	H1077	H4131

दुष्टता, किसी जन को स्थिर नहीं कर सकती किन्तु धर्मी जन कभी उखाड़ नहींपाता है।

4

אֵשֶׁת־	חַיִל	עֲטֶרֶת	בַּעְלָהּ	וּכְרָקָב	בְּעַצְמוֹתָיו	מְבִישָׁה׃	
स्त्री	समर्थ	मुकुट	पति-की	और-जैसे-सड़ांध	हड्डियों-में	लज्जाजनक-है	
H0802	H2428	H5850	H1167	H7538	H6106	H0954	

एक उत्तम पत्नी के साथ पति खुश और गर्वीला होता है। किन्तु वह पत्नी जो अपने पति को लजाती है वह उसको शरीर की बीमारी जैसे होती है।

5

מַחְשְׁבוֹת	צַדִּיקִים	מִשְׁפָּט	תַּחְבֻּלוֹת	רְשָׁעִים	מִרְמָה׃	
विचार	धर्मियों-के	न्याय	योजनाएँ	दुष्टों-की	धोखा	
H4284	H6662	H4941	H8458	H7563	H4820	

धर्मी की योजनाएँ न्याय संगत होती हैं जबकि दुष्ट की सलाह कपटपूर्ण रहती है।

6

דִּבְרֵי	רְשָׁעִים	אֶרֶב־	דָּם	וּפִי	יְשָׁרִים	יַצִּילֵם׃
शब्द	दुष्टों-के	घात	लहू-की	और-मुँह	सीधों-का	बचाएगा-उन्हें
H1697	H7563	H0693	H1818	H6310	H3477	H5337

दुष्ट के शब्द घात में झपटने की रहते है। किन्तु सज्जन की वाणी उनको बचाती है।

7

הָפוֹךְ	רְשָׁעִים	וְאֵינָם	וּבֵית	צַדִּיקִים	יַעֲמֹד׃	
उलटाए-जाते-हैं	दुष्ट	और-नहीं-हैं-वे	और-घर	धर्मियों-का	खड़ा-रहेगा	
H2015	H7563	H0369		H6662	H5975	

जो खोटे होते हैं उखाड़ फेंके जाते हैं, किन्तु खरे जन का घराना टिका रहता है।

8

לְפִי־	שִׂכְלוֹ	יְהֻלַּל־	אִישׁ	וְנַעֲוֵה־	לֵב	יִהְיֶה	לָבוּז׃
अनुसार	बुद्धि-के	प्रशंसा-किया-जाएगा	पुरुष	और-टेढ़ा	हृदय-का	होगा	तुच्छ-के-लिए
H6310	H7922		H0376			H1961	H0937

व्यक्ति अपनी भली समझ के अनुसार प्रशंसा पाता है, किन्तु ऐसे जन जिनके मन कुपथ गामी हों घृणा के पात्र होते हैं।

9

טוֹב	נִקְלֶה	וְעֶבֶד	לוֹ	מִתְכַּבֵּד	וַחֲסַר־	לָחֶם׃	
अच्छा	तुच्छ	और-दास	उसके-लिए	सम्मानित-करनेवाले-से	और-रहित	रोटी-के	
	H7034	H5650		H3513	H2638	H3899	

सामान्य जन बनकर परिश्रम करना उत्तम है इसके बजाए कि भूखे रहकर महत्वपूर्ण जन सा स्वांग भरना।

10

יוֹדֵ֣עַ	צַ֭דִּיק	נֶ֣פֶשׁ	בְּהֶמְתּ֑וֹ	וְֽרַחֲמֵ֥י	רְ֝שָׁעִ֗ים	אַכְזָרִֽי׃
जानता-है	धर्मी	प्राण	पशु-के	और-दया	दुष्टों-की	निर्दयी
H3045	H6662	H5315	H0929		H7563	H0394

> धर्मी अपने पशु तक की जरूरतों का ध्यान रखता है, किन्तु दुष्ट के सर्वाधिक दया भरे काम भी कठोर क्रूर रहते हैं।

11

עֹבֵ֣ד	אַ֭דְמָתוֹ	יִֽשְׂבַּֽע־	לָ֑חֶם	וּמְרַדֵּ֖ף	רֵיקִ֣ים	חֲסַר־	לֵֽב׃
जोतनेवाला	भूमि-को	तृप्त-होगा	रोटी-से	और-पीछा-करनेवाला	व्यर्थों-का	रहित	हृदय-के
H5647	H0127	H7646	H3899	H7291	H7386	H2638	

> जो अपने खेत में काम करता है उसके पास खाने की बहुतायत होंगी; किन्तु पीछे भागता रहता जो ना समझ के उसके पास विवेक का अभाव रहता है।

12

חָמַ֣ד	רָ֭שָׁע	מְצ֣וֹד	רָעִ֑ים	וְשֹׁ֖רֶשׁ	צַדִּיקִ֣ים	יִתֵּֽן׃
लालसा-करता-है	दुष्ट	जाल	बुरों-की	और-जड़	धर्मियों-की	देती-है
	H7563			H8328	H6662	H5414

> दुष्ट जन पापियों की लूट को चाहते हैं, किन्तु धर्मी जन की जड़ हरी रहती है।

13

בְּפֶ֣שַׁע	שְׂ֭פָתַיִם	מוֹקֵ֣שׁ	רָ֑ע	וַיֵּצֵ֖א	מִצָּרָ֣ה	צַדִּֽיק׃
अपराध-में	होंठों-के	फंदा	बुरा	और-निकलता-है	संकट-से	धर्मी
H6588	H8193	H4170		H3318		H6662

> पापी मनुष्य को पाप उसका अपना ही शब्द—जाल में फँसा लेता है। किन्तु खरा व्यक्ति विपत्ति से बच निकलता।

14

מִפְּרִ֣י	פִי־	אִ֭ישׁ	יִשְׂבַּֽע־	ט֑וֹב	וּגְמ֥וּל	יְדֵי־	אָ֝דָ֗ם	[ישוב]	(יָשִׁ֥יב)	לֽוֹ׃
फल-से	मुँह-के	पुरुष	तृप्त-होगा	भलाई-से	और-प्रतिफल	हाथों-का	आदमी	लौटाएगा	लौटाएगा	उसे
H6529	H6310	H0376	H7646		H1576	H3027	H0120	H7725	H7725	

> अपनी वाणी के सुफल से व्यक्ति श्रेष्ठ वस्तुओं से भर जाता है। निश्चय यह उतना ही जितना अपने हाथों का काम करके उसको सफलता देता है।

15

דֶּ֣רֶךְ	אֱ֭וִיל	יָשָׁ֣ר	בְּעֵינָ֑יו	וְשֹׁמֵ֖עַ	לְעֵצָ֣ה	חָכָֽם׃
मार्ग	मूर्ख-का	सीधा	आँखों-में	और-सुननेवाला	सलाह-को	बुद्धिमान
H1870	H0191	H3477		H8085	H6098	H2450

> मूर्ख को अपना मार्ग ठीक जान पड़ता है, किन्तु बुद्धिमान व्यक्ति सन्मति सुनता है।

16

אֱוִ֗יל	בַּ֭יּוֹם	יִוָּדַ֣ע	כַּעְס֑וֹ	וְכֹסֶ֖ה	קָל֣וֹן	עָרֽוּם׃
मूर्ख	दिन-में	जाना-जाता-है	क्रोध	और-ढाँकनेवाला	अपमान-को	चतुर
H0191	H3117	H3045		H3680	H7036	H6175

> मूर्ख जन अपनी झुंझलाहट झटपट दिखाता है, किन्तु बुद्धिमान अपमान की उपेक्षा करता है।

17

יָפִ֣יחַ	אֱ֭מוּנָה	יַגִּ֣יד	צֶ֑דֶק	וְעֵ֖ד	שְׁקָרִ֣ים	מִרְמָֽה׃
बोलनेवाला	सच्चाई-को	बताता-है	धार्मिकता	और-गवाह	झूठों-का	धोखा
H6315	H0530	H5046	H6664	H5707	H8267	H4820

> सत्यपूर्ण साक्षी खरी गवाही देता है, किन्तु झूठा साक्षी झूठी बातें बनाता है।

18

יֵ֣שׁ	בּ֭וֹטֶה	כְּמַדְקְר֣וֹת	חָ֑רֶב	וּלְשׁ֥וֹן	חֲ֝כָמִ֗ים	מַרְפֵּֽא׃
है	बोलनेवाला	जैसे-छुरा	तलवार-का	और-जीभ	बुद्धिमानों-की	चंगाई
H3426	H0981	H4094	H2719	H3956	H2450	H4832

> अविचारित वाणी तलवार सी छेदती, किन्तु विवेकी की वाणी घावों को भरती है।

19

שְֽׂפַת־	אֱ֭מֶת	תִּכּ֣וֹן	לָעַ֑ד	וְעַד־	אַ֝רְגִּ֗יעָה	לְשׁ֣וֹן	שָֽׁקֶר׃
होंठ	सच्चाई-का	स्थिर-रहता-है	सदा-के-लिए	और-तक	क्षणभर	जीभ	झूठ-का
H8193	H0571		H5703	H5704		H3956	H8267

> सत्यपूर्ण वाणी सदा सदा टिकी रहती है, किन्तु झूठी जीभ बस क्षण भर को टिकती है।

שִׂמְחָה׃	שָׁלוֹם	וּֽלְיֹעֲצֵי	רָע	חֹרְשֵׁי	בְּלֶב־	מִרְמָה	20
आनन्द	शान्ति-के	और-सलाहकारों-के-लिए	बुराई	गढ़नेवालों-के	हृदय-में	धोखा	
H8057	H7965	H3289				H4820	

> उनके मनों में छल—कपट भरा रहता है, जो कुचक्र भरी योजना रचा करते हैं। किन्तु जो शान्ति को बढ़ावा देते हैं, आनन्द पाते हैं।

רָע׃	מָלְאוּ	וּרְשָׁעִים	אָוֶן	כָּל־	לַצַּדִּיק	יְאֻנֶּה	לֹא־	21
बुराई-से	भरे-हैं	और-दुष्ट	अधर्म	कोई-भी	धर्मी-को	आएगी	नहीं	
	H4390	H7563	H0205	H3605	H6662	H0579	H3808	

> धर्मी जन पर कभी विपत्ति नहीं गिरेगी, किन्तु दुष्टों को तो विपत्तियाँ घेरेंगी।

רְצוֹנוֹ׃	אֱמוּנָה	וְעֹשֵׂי	שָׁקֶר	שִׂפְתֵי־	יְהוָה	תּוֹעֲבַת	22
उसकी-प्रसन्नता	सच्चाई-को	और-करनेवाले	झूठ-के	होंठ	यहोवा-के-लिए	घृणा	
H7522	H0530		H8267	H8193	H3068	H8441	

> ऐसे होठों को यहोवा घृणा करता है जो झूठ बोलते हैं, किन्तु उन लोगों से जो सत्य से पूर्ण हैं, वह प्रसन्न रहता है।

אִוֶּלֶת׃	יִקְרָא	כְּסִילִים	וְלֵב	דָּעַת	כֹּסֶה	עָרוּם	אָדָם	23
मूर्खता-को	पुकारता-है	मूर्खों-का	और-हृदय	ज्ञान-को	ढाँकता-है	चतुर	आदमी	
H0200	H7121	H3684		H1847	H3680	H6175	H0120	

> ज्ञानी अधिक बोलता नहीं है, चुप रहता है किन्तु मूर्ख अधिक बोल बोलकर अपने अज्ञान को दर्शाता है।

לָמַס׃	תִּהְיֶה	וּרְמִיָּה	תִּמְשׁוֹל	חָרוּצִים	יַד־	24
बेगारी-के-लिए	होगी	और-आलसी	शासन-करेगा	परिश्रमियों-का	हाथ	
H4522	H1961		H4910		H3027	

> परिश्रमी हाथ तो शासन करेंगे, किन्तु आलस्य का परिणाम बेगार होगा।

יְשַׂמְּחֶנָּה׃	טוֹב	וְדָבָר	יַשְׁחֶנָּה	אִישׁ	בְלֶב־	דְּאָגָה	25
आनन्दित-करता-है-उसे	अच्छा	और-शब्द	झुकाती-है-उसे	पुरुष-के	हृदय-में	चिन्ता	
H8055		H1697	H7812	H0376		H1674	

> चिंतापूर्ण मन व्यक्ति को दबोच लेता है; किन्तु भले वचन उसे हर्ष से भर देते हैं।

תַּתְעֵם׃	רְשָׁעִים	וְדֶרֶךְ	צַדִּיק	מֵרֵעֵהוּ	יָתֵר	26
भटकाएगा-उन्हें	दुष्टों-का	और-मार्ग	धर्मी	पड़ोसी-से	अधिक	
H8582	H7563	H1870	H6662	H7453	H8446	

> धर्मी मनुष्य मित्रता में सतर्क रहता है, किन्तु दुष्टों की चाल उन्हीं को भटकाती है।

חָרוּץ׃	יָקָר	אָדָם	וְהוֹן־	צֵידוֹ	רְמִיָּה	יַחֲרֹךְ	לֹא־	27
परिश्रमी	बहुमूल्य	आदमी-का	और-धन	शिकार-को	आलसी	भूनेगा	नहीं	
	H3368	H0120	H1952			H2760	H3808	

> आलसी मनुष्य निज शिकार ढूँढ नहीं पाता किन्तु परिश्रमी जो कुछ उसके पास है, उसे आदर देता है।

מָוֶת׃	אַל־	נְתִיבָה	וְדֶרֶךְ	חַיִּים	צְדָקָה	בְּאֹרַח־	28
मृत्यु	नहीं	पथ-के	और-मार्ग	जीवन	धार्मिकता-के	मार्ग-में	
H4194	H0408		H1870		H6666	H0734	

> नेकी के मार्ग में जीवन रहता है, और उस राह के किनारे अमरता बसती है।